

ब्रह्मावर्त पी जी कॉलेज मंधना कानपुर

हिंदी विभाग

सत्र 2026-27

B.A. तृतीय सेमेस्टर — हिंदी गद्य : 50 प्रश्नोत्तर

1. हिंदी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर: हिंदी गद्य का व्यवस्थित विकास आधुनिक काल में हुआ। भारतेन्दु हरिश्चंद्र के समय हिंदी गद्य को आधुनिक चेतना, राष्ट्रीय भावना और सामाजिक सुधार से जोड़ा गया। द्विवेदी युग में भाषा-शुद्धि, व्याकरण, विचार-प्रधानता और सामाजिक उपयोगिता पर बल दिया गया। प्रेमचंद ने कहानी और उपन्यास को सामाजिक यथार्थ से जोड़ा। आगे चलकर छायावादोत्तर काल में मनोवैज्ञानिक, प्रगतिवादी, प्रयोगवादी, आंचलिक और नई कहानी जैसी प्रवृत्तियाँ विकसित हुईं। निबंध, कहानी, उपन्यास, नाटक, संस्मरण, रेखाचित्र और व्यंग्य आदि गद्य-विधाओं का भी निरंतर विकास हुआ। आधुनिक हिंदी गद्य ने व्यक्ति और समाज दोनों की समस्याओं को अभिव्यक्ति दी।

2. हिंदी गद्य की प्रमुख विधाएँ कौन-कौन सी हैं?

उत्तर: हिंदी गद्य की प्रमुख विधाओं में कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक, एकांकी, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा-वृत्तांत और व्यंग्य प्रमुख हैं। प्रत्येक विधा की अपनी विशेषता होती है। कहानी में सीमित घटनाओं और पात्रों के माध्यम से जीवन

की किसी स्थिति को प्रस्तुत किया जाता है। उपन्यास में जीवन का विस्तृत चित्रण होता है। निबंध में लेखक अपने विचार और अनुभव प्रस्तुत करता है। नाटक संवाद और अभिनय पर आधारित होता है। संस्मरण में स्मृतियों का चित्रण तथा रेखाचित्र में किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताओं का चित्रण होता है। इन विधाओं ने हिंदी गद्य को समृद्ध और व्यापक बनाया है।

3. भारतेन्दु हरिश्चंद्र का हिंदी गद्य में योगदान बताइए।

उत्तर: भारतेन्दु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक कहा जाता है। उन्होंने हिंदी गद्य को आधुनिक दृष्टि प्रदान की। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक सुधार, देशप्रेम और तत्कालीन व्यवस्था की आलोचना दिखाई देती है। उन्होंने नाटक, निबंध, पत्रकारिता और अन्य गद्य-विधाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 'अंधेर नगरी' उनकी प्रसिद्ध रचना है। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता को भी प्रोत्साहित किया और हिंदी भाषा को जनसामान्य के निकट लाने का प्रयास किया। भारतेन्दु के साहित्य में अंग्रेजी शासन की आर्थिक-सामाजिक परिस्थितियों पर चिंता तथा भारतीय संस्कृति के प्रति गौरव की भावना दिखाई देती है। इसलिए आधुनिक हिंदी गद्य के विकास में उनका योगदान आधारभूत माना जाता है।

4. द्विवेदी युग की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: द्विवेदी युग हिंदी गद्य के विकास का महत्वपूर्ण चरण है। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से हिंदी भाषा और साहित्य को नई दिशा दी। इस युग में भाषा-शुद्धि, व्याकरण, अनुशासन और विचार-प्रधानता पर बल दिया गया। राष्ट्रीय भावना, समाज-सुधार, शिक्षा, नारी-जागरण और नैतिकता जैसे विषय साहित्य में प्रमुख बने। लेखकों ने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन न मानकर समाज-निर्माण का माध्यम समझा। गद्य की भाषा अधिक स्पष्ट, व्यवस्थित और तर्कपूर्ण

बनी। द्विवेदी युग ने हिंदी गद्य को गंभीर विचार और सामाजिक उपयोगिता से जोड़ा तथा आगे के साहित्यिक विकास के लिए मजबूत आधार तैयार किया।

5. प्रेमचंद का हिंदी गद्य साहित्य में योगदान बताइए।

उत्तर: प्रेमचंद हिंदी के महान कथाकार और यथार्थवादी साहित्यकार हैं। उन्होंने कहानी और उपन्यास को भारतीय समाज के वास्तविक जीवन से जोड़ा। उनके साहित्य में किसान, मजदूर, स्त्री, गरीब और शोषित वर्ग की समस्याओं का मार्मिक चित्रण मिलता है। 'गोदान', 'निर्मला', 'गबन' आदि उनके प्रमुख उपन्यास हैं। 'ईदगाह', 'कफन', 'पूस की रात' और 'पंच परमेश्वर' उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। उनकी भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली है। प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक विषमता, आर्थिक शोषण, मानवीय संवेदना और नैतिक संघर्ष प्रमुख हैं। उन्होंने साहित्य को जीवन और समाज से जोड़कर हिंदी गद्य को नई ऊँचाई प्रदान की।

6. 'पंच परमेश्वर' कहानी का मूल संदेश क्या है?

उत्तर: 'पंच परमेश्वर' प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी है। इसमें न्याय की महत्ता और निष्पक्षता को प्रमुखता दी गई है। कहानी के प्रमुख पात्र अलगू चौधरी और जुम्मन शेख मित्र हैं। पंचायत में जब एक-दूसरे के विरुद्ध निर्णय देने की स्थिति आती है, तब दोनों निजी मित्रता से ऊपर उठकर न्याय का पक्ष लेते हैं। कहानी का मुख्य संदेश है कि न्याय के आसन पर बैठने के बाद व्यक्ति को व्यक्तिगत संबंध, मित्रता और शत्रुता से ऊपर उठना चाहिए। पंच के पद पर बैठते ही व्यक्ति में न्याय-बोध जागृत होता है। कहानी ग्रामीण जीवन, पंचायत व्यवस्था और मानवीय नैतिकता का प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत करती है।

7. 'गोदान' का साहित्यिक महत्व स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: 'गोदान' प्रेमचंद का प्रसिद्ध सामाजिक उपन्यास है। इसमें

भारतीय किसान जीवन की वास्तविक परिस्थितियों का मार्मिक चित्रण किया गया है। होरी इसका प्रमुख पात्र है, जिसके माध्यम से किसान की गरीबी, ऋण, शोषण और सामाजिक दबाव को व्यक्त किया गया है। उपन्यास में ग्रामीण जीवन के साथ-साथ शहरी समाज, जाति-व्यवस्था, आर्थिक असमानता और स्त्री की स्थिति का भी चित्रण है। प्रेमचंद ने पात्रों को उनके सामाजिक परिवेश से जोड़कर प्रस्तुत किया है। भाषा सरल और स्वाभाविक है। 'गोदान' केवल एक किसान की कहानी नहीं बल्कि तत्कालीन भारतीय समाज की व्यापक तस्वीर है। इसी कारण इसे हिंदी के महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यासों में गिना जाता है।

8. हिंदी कहानी की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: कहानी गद्य की ऐसी विधा है जिसमें किसी घटना, समस्या, अनुभव या जीवन-स्थिति को सीमित आकार में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। कहानी के प्रमुख तत्व कथानक, पात्र, संवाद, वातावरण, भाषा-शैली और उद्देश्य हैं। कहानी का कथानक सामान्यतः सघन होता है और उसमें अनावश्यक विस्तार नहीं होता। पात्र स्वाभाविक और विश्वसनीय होने चाहिए। आधुनिक हिंदी कहानी में सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदना, मनोवैज्ञानिक संघर्ष, मध्यवर्गीय जीवन और सामाजिक समस्याओं को विशेष स्थान मिला है। प्रेमचंद ने हिंदी कहानी को सामाजिक यथार्थ से जोड़ा। बाद में नई कहानी आंदोलन ने व्यक्ति के आंतरिक संघर्षों को भी प्रमुखता दी।

9. हिंदी उपन्यास की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: उपन्यास गद्य की विस्तृत कथात्मक विधा है। इसमें जीवन और समाज का व्यापक चित्रण किया जाता है। उपन्यास में कथानक, पात्र, संवाद, वातावरण, घटनाएँ और विचार प्रमुख तत्व होते हैं। कहानी की तुलना में उपन्यास में अधिक विस्तार और चरित्र-विकास की संभावना रहती है। इसमें सामाजिक, ऐतिहासिक,

राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक और आंचलिक जीवन को प्रस्तुत किया जा सकता है। प्रेमचंद ने सामाजिक यथार्थ को उपन्यास का प्रमुख विषय बनाया। बाद के उपन्यासकारों ने व्यक्ति के मानसिक संघर्ष, परिवार, राजनीति, ग्रामीण जीवन और बदलती सामाजिक परिस्थितियों को अभिव्यक्ति दी। हिंदी उपन्यास भारतीय जीवन के विविध रूपों का व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है।

10. हिंदी निबंध की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: निबंध गद्य की विचारात्मक एवं साहित्यिक विधा है जिसमें लेखक किसी विषय पर अपने विचार, अनुभव और भावनाएँ स्वतंत्र रूप से व्यक्त करता है। निबंध की प्रमुख विशेषताएँ विषय की स्पष्टता, विचारों की क्रमबद्धता, भाषा की सहजता और लेखक की व्यक्तिगत दृष्टि हैं। निबंध विचारात्मक, भावात्मक, वर्णनात्मक अथवा व्यंग्यात्मक हो सकता है। हिंदी में भारतेन्दु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचंद्र शुक्ल और हजारीप्रसाद द्विवेदी ने निबंध विधा को समृद्ध किया। अच्छे निबंध में विचार और भाषा का संतुलन रहता है। निबंध पाठक को जानकारी देने के साथ-साथ चिंतन के लिए भी प्रेरित करता है।

11. आचार्य रामचंद्र शुक्ल का हिंदी गद्य में योगदान बताइए।

उत्तर: आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी के महान आलोचक, इतिहासकार और निबंधकार थे। उन्होंने हिंदी गद्य को गंभीर, तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान की। 'हिंदी साहित्य का इतिहास' उनकी प्रसिद्ध कृति है। 'चिंतामणि' में उनके महत्वपूर्ण निबंध संकलित हैं। उनके लेखन में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, सामाजिक दृष्टि और लोकमंगल की भावना दिखाई देती है। उन्होंने साहित्य को समाज और मानव जीवन से जोड़कर देखा। उनकी भाषा गंभीर, विचारपूर्ण और व्यवस्थित है। हिंदी आलोचना को वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित स्वरूप देने में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

उनके विचारों का हिंदी साहित्य के अध्ययन और मूल्यांकन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

12. हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंधों की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: हजारीप्रसाद द्विवेदी हिंदी के प्रसिद्ध निबंधकार, आलोचक और साहित्येतिहासकार थे। उनके निबंधों में साहित्य, संस्कृति, इतिहास और मानव जीवन का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। 'अशोक के फूल', 'कुटज' और 'कल्पलता' उनके प्रसिद्ध निबंध हैं। उनकी भाषा विद्वत्तापूर्ण होते हुए भी सहज, रोचक और प्रभावपूर्ण है। वे सामान्य विषयों में भी व्यापक सांस्कृतिक और मानवीय अर्थ खोज लेते हैं। उनके निबंधों में भारतीय परंपरा के प्रति गहरी समझ तथा आधुनिक मानवतावादी दृष्टि दिखाई देती है। उनकी शैली में विचार, भाव, हास्य और व्यंग्य का सुंदर संतुलन मिलता है।

13. 'अंधेर नगरी' की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: 'अंधेर नगरी' भारतेन्दु हरिश्चंद्र का प्रसिद्ध व्यंग्यात्मक नाटक है। इसमें अव्यवस्थित शासन, मूर्खतापूर्ण न्याय-व्यवस्था और भ्रष्ट प्रशासन पर तीखा व्यंग्य किया गया है। 'टके सेर भाजी, टके सेर खाजा' जैसी उक्ति उस व्यवस्था की अराजकता को व्यक्त करती है जहाँ विवेक और उचित मूल्य का अभाव है। नाटक की भाषा सरल और संवाद रोचक हैं। घटनाओं में हास्य दिखाई देता है, लेकिन उसके पीछे गंभीर सामाजिक संदेश छिपा है। लेखक ने ऐसी शासन-व्यवस्था की आलोचना की है जिसमें न्याय विवेक पर नहीं बल्कि मनमाने निर्णयों पर आधारित हो। इस कारण यह रचना आज भी प्रासंगिक लगती है।

14. संस्मरण किसे कहते हैं? इसकी विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: संस्मरण गद्य की वह विधा है जिसमें लेखक अपने जीवन से जुड़े व्यक्तियों, घटनाओं या अनुभवों को स्मृति के आधार पर प्रस्तुत करता है। इसमें लेखक की व्यक्तिगत अनुभूति और

भावनात्मक संबंध महत्वपूर्ण होते हैं। संस्मरण में तथ्य के साथ संवेदना का भी समावेश होता है। लेखक किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व, व्यवहार और विशेषताओं को अपनी स्मृतियों के आधार पर चित्रित करता है। इसकी भाषा सामान्यतः आत्मीय, सरल और प्रभावशाली होती है। संस्मरण साहित्य के माध्यम से हमें साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की अनेक घटनाओं की जानकारी मिलती है। इसमें लेखक की दृष्टि और अनुभव प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

15. रेखाचित्र की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर: रेखाचित्र गद्य की ऐसी विधा है जिसमें किसी व्यक्ति, वस्तु या दृश्य की प्रमुख विशेषताओं को संक्षिप्त और प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें व्यक्ति का पूरा जीवन-वृत्त नहीं दिया जाता, बल्कि उसके व्यक्तित्व की विशेष रेखाओं को उभारा जाता है। लेखक सूक्ष्म निरीक्षण और संवेदनशीलता के माध्यम से व्यक्ति को जीवंत बना देता है। भाषा चित्रात्मक और प्रभावशाली होती है। अच्छे रेखाचित्र में कम शब्दों में अधिक प्रभाव उत्पन्न किया जाता है। व्यक्ति के स्वभाव, व्यवहार, रूप, गुण-दोष और सामाजिक परिवेश का संकेतात्मक चित्रण किया जाता है। हिंदी गद्य में रेखाचित्र ने व्यक्तित्व-चित्रण की कला को समृद्ध किया है।

16. आत्मकथा और जीवनी में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: आत्मकथा और जीवनी दोनों किसी व्यक्ति के जीवन पर आधारित गद्य-विधाएँ हैं, लेकिन दोनों में मुख्य अंतर लेखक का होता है। आत्मकथा में व्यक्ति स्वयं अपने जीवन की घटनाओं और अनुभवों को लिखता है। इसमें व्यक्तिगत अनुभूति, आत्मविश्लेषण और भावनाओं का विशेष महत्व रहता है। इसके विपरीत जीवनी किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा लिखी जाती है और उसमें संबंधित व्यक्ति के जीवन, कार्य, व्यक्तित्व तथा उपलब्धियों

का वर्णन किया जाता है। जीवनी में अपेक्षाकृत वस्तुनिष्ठ दृष्टि की आवश्यकता होती है। दोनों विधाएँ व्यक्ति के संघर्ष और जीवन-मूल्यों को समझने में सहायता करती हैं तथा साहित्य और इतिहास दोनों की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

17. यात्रा-वृत्तांत क्या है?

उत्तर: यात्रा-वृत्तांत गद्य की वह विधा है जिसमें लेखक अपनी यात्रा के दौरान देखे गए स्थानों, लोगों, प्रकृति, संस्कृति और अनुभवों का साहित्यिक वर्णन करता है। इसमें केवल स्थानों का विवरण नहीं होता बल्कि लेखक की व्यक्तिगत अनुभूति और दृष्टि भी शामिल रहती है। अच्छा यात्रा-वृत्तांत पाठक को ऐसा अनुभव कराता है मानो वह स्वयं उस यात्रा में शामिल हो। इसमें ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जानकारी भी मिलती है। भाषा वर्णनात्मक, चित्रात्मक और रोचक होती है। यात्रा-वृत्तांत ज्ञान और मनोरंजन दोनों प्रदान करता है तथा विभिन्न क्षेत्रों के जीवन और संस्कृति से परिचित कराता है।

18. व्यंग्य की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: व्यंग्य साहित्य की ऐसी शैली है जिसमें हास्य, कटाक्ष और विडंबना के माध्यम से सामाजिक एवं व्यक्तिगत विसंगतियों को उजागर किया जाता है। इसका उद्देश्य केवल हँसाना नहीं बल्कि गलत प्रवृत्तियों पर विचार करने के लिए प्रेरित करना भी है। व्यंग्यकार भ्रष्टाचार, पाखंड, सामाजिक रूढ़ियों, दिखावे और अन्याय पर प्रहार करता है। इसकी भाषा सामान्यतः तीखी, प्रभावपूर्ण और संकेतात्मक होती है। श्रेष्ठ व्यंग्य के पीछे गंभीर सामाजिक चिंता रहती है। हिंदी में हरिशंकर परसाई, शरद जोशी आदि ने व्यंग्य को महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठित किया। व्यंग्य समाज को उसकी कमियों का आईना दिखाता है।

19. हरिशंकर परसाई का हिंदी व्यंग्य में योगदान बताइए।

उत्तर: हरिशंकर परसाई हिंदी के प्रमुख व्यंग्यकार हैं। उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य किया। उनके लेखन में भ्रष्टाचार, पाखंड, अंधविश्वास, अवसरवाद और मध्यवर्गीय मानसिकता की आलोचना मिलती है। उनकी भाषा सरल, बोलचाल की और प्रभावशाली है। हास्य के साथ गंभीर सामाजिक चिंता उनकी रचनाओं की विशेषता है। 'विकलांग श्रद्धा का दौर' और 'सदाचार का ताबीज' जैसी रचनाएँ उनकी व्यंग्य-दृष्टि को स्पष्ट करती हैं। परसाई का व्यंग्य पाठक को हँसाने के साथ आत्मचिंतन के लिए भी प्रेरित करता है। उन्होंने व्यंग्य को सामाजिक चेतना का प्रभावशाली माध्यम बनाया।

20. यथार्थवाद से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: यथार्थवाद साहित्य की वह प्रवृत्ति है जिसमें जीवन और समाज को उसके वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है। इसमें कल्पना की अपेक्षा सामाजिक परिस्थितियों, आर्थिक विषमता, शोषण, संघर्ष और सामान्य मनुष्य के जीवन को अधिक महत्व दिया जाता है। हिंदी साहित्य में प्रेमचंद यथार्थवादी परंपरा के प्रमुख साहित्यकार हैं। उनके साहित्य में किसान, मजदूर, स्त्री और गरीब वर्ग की वास्तविक समस्याएँ सामने आती हैं। यथार्थवाद केवल कठिनाइयों का वर्णन नहीं करता बल्कि जीवन की सच्चाइयों को पहचानने और सामाजिक चेतना पैदा करने का प्रयास भी करता है। इससे साहित्य समाज के अधिक निकट आता है।

21. प्रगतिवाद की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: प्रगतिवाद साहित्य की ऐसी प्रवृत्ति है जिसमें सामाजिक समानता, शोषण-विरोध और मानव-मुक्ति की भावना को प्रमुखता दी जाती है। इसमें किसान, मजदूर और वंचित वर्ग के जीवन को साहित्य का विषय बनाया गया। प्रगतिवादी लेखक आर्थिक

विषमता, सामंती शोषण, सामाजिक अन्याय और रूढ़ियों का विरोध करते हैं। साहित्य को समाज परिवर्तन का माध्यम माना गया। प्रगतिवादी रचनाओं में जनपक्षधरता, संघर्ष, यथार्थवाद और परिवर्तन की आकांक्षा दिखाई देती है। हिंदी कहानी, उपन्यास, कविता और निबंध पर इस प्रवृत्ति का प्रभाव पड़ा। प्रगतिवाद ने साहित्य को आम जनता की समस्याओं से अधिक गहराई से जोड़ा।

22. नई कहानी आंदोलन की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: नई कहानी आंदोलन ने हिंदी कहानी को व्यक्ति के आंतरिक जीवन और आधुनिक सामाजिक संबंधों से जोड़ा। इसमें व्यक्ति के अकेलेपन, मानसिक तनाव, दांपत्य संबंधों, मध्यवर्गीय जीवन और अस्तित्वगत समस्याओं को महत्व दिया गया। नई कहानीकारों ने बड़े सामाजिक नारों के स्थान पर व्यक्ति के निजी अनुभव और मानसिक संघर्ष को अधिक महत्व दिया। कथानक की अपेक्षा अनुभूति और मनोवैज्ञानिक सत्य को भी महत्व मिला। भाषा अधिक स्वाभाविक और संवाद जीवन के निकट हुए। नई कहानी ने हिंदी कहानी को आधुनिक संवेदना और मनोवैज्ञानिक गहराई प्रदान की।

23. आंचलिक उपन्यास से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: आंचलिक उपन्यास किसी विशेष क्षेत्र के जीवन, संस्कृति, बोली, लोकाचार, परंपरा और सामाजिक परिस्थितियों का व्यापक चित्रण करता है। इसमें किसी क्षेत्र को केवल भौगोलिक स्थान के रूप में नहीं बल्कि वहाँ के संपूर्ण जीवन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। स्थानीय भाषा, लोकगीत, रीति-रिवाज और सामाजिक संबंध इसकी विशेषताएँ हैं। फणीश्वरनाथ रेणु का 'मैला आँचल' हिंदी का प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यास है। आंचलिक उपन्यासों ने हिंदी साहित्य में भारत के विभिन्न क्षेत्रों के जीवन को स्थान दिया। इससे साहित्य अधिक विविध, जीवंत और भारतीय जनजीवन के निकट बना।

24. साहित्य और समाज का संबंध स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: साहित्य और समाज का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। साहित्यकार अपने समय की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। इसलिए साहित्य में समाज की समस्याएँ, संघर्ष, परंपराएँ और आकांक्षाएँ दिखाई देती हैं। दूसरी ओर साहित्य समाज को प्रभावित भी करता है। वह पाठकों में जागरूकता पैदा करके सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा देता है। हिंदी गद्य में गरीबी, शोषण, जातिगत भेदभाव, नारी-असमानता, भ्रष्टाचार और सामाजिक रूढ़ियों का चित्रण इसी संबंध को स्पष्ट करता है। साहित्य समाज का दर्पण होने के साथ-साथ समाज को बेहतर बनाने वाली चेतना का माध्यम भी है।

25. मानवीय संवेदना का हिंदी गद्य में क्या महत्व है?

उत्तर: मानवीय संवेदना का अर्थ मनुष्य के सुख-दुख, संघर्ष और भावनाओं को समझना तथा उनके प्रति सहानुभूति रखना है। हिंदी गद्य की श्रेष्ठ रचनाओं में मानवीय संवेदना प्रमुख तत्व रही है। कहानी और उपन्यास में गरीब, किसान, मजदूर, स्त्री, वृद्ध और उपेक्षित लोगों के जीवन का चित्रण संवेदना के साथ किया गया है। प्रेमचंद के साहित्य में यह विशेष रूप से दिखाई देता है। संवेदनशील साहित्य पाठक के भीतर करुणा, सहानुभूति और मानवता की भावना विकसित करता है। साहित्य तभी व्यापक प्रभाव पैदा करता है जब उसमें मनुष्य के जीवन और भावनाओं की सच्ची अनुभूति मौजूद हो।

26. चरित्र-चित्रण से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: चरित्र-चित्रण का अर्थ किसी साहित्यिक पात्र के व्यक्तित्व, स्वभाव, विचार, व्यवहार, गुण-दोष और मानसिक स्थिति का प्रभावपूर्ण चित्रण करना है। लेखक संवाद, घटनाओं, क्रियाओं और प्रत्यक्ष वर्णन के माध्यम से पात्र का चरित्र प्रस्तुत करता है। अच्छा चरित्र-चित्रण पात्र को जीवंत और विश्वसनीय बनाता है। प्रेमचंद की

रचनाओं में पात्र अपने सामाजिक परिवेश और मानवीय गुणों के कारण अत्यंत प्रभावशाली बनते हैं। आधुनिक साहित्य में बाहरी व्यवहार के साथ पात्र की आंतरिक मनःस्थिति पर भी ध्यान दिया गया है। चरित्र-चित्रण के माध्यम से लेखक रचना के उद्देश्य और सामाजिक संदेश को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है।

27. कथानक किसे कहते हैं?

उत्तर: कहानी या उपन्यास में घटनाओं के क्रमबद्ध संगठन को कथानक कहते हैं। कथानक रचना की आधारभूत संरचना है। इसके माध्यम से पात्रों, घटनाओं और संघर्ष का विकास होता है। अच्छे कथानक में आरंभ, विकास, संघर्ष और परिणाम का उचित संयोजन रहता है। कथानक रोचक होने के साथ विषय और पात्रों के अनुरूप होना चाहिए। आधुनिक कहानियों में कई बार बाहरी घटनाओं की अपेक्षा किसी अनुभव या मानसिक स्थिति को अधिक महत्व दिया जाता है। फिर भी घटनाओं और भावों को जोड़ने वाला क्रम रचना की एकता बनाए रखता है। कथानक कहानी को गति और प्रभाव प्रदान करता है।

28. संवाद का क्या महत्व है?

उत्तर: संवाद कहानी, उपन्यास और नाटक में पात्रों के बीच होने वाली बातचीत है। इसके माध्यम से पात्रों का स्वभाव, विचार, संबंध और मानसिक स्थिति स्पष्ट होती है। संवाद कथानक को गति प्रदान करता है और घटनाओं को स्वाभाविक बनाता है। प्रभावशाली संवाद छोटे, प्रसंगानुकूल और पात्रों के चरित्र के अनुरूप होते हैं। नाटक में संवाद सबसे महत्वपूर्ण साधनों में से एक है। कहानी और उपन्यास में भी संवाद कथानक तथा चरित्र-चित्रण को प्रभावशाली बनाते हैं। संवाद के माध्यम से लेखक बिना लंबा विवरण दिए परिस्थितियों और पात्रों के विचार पाठक तक पहुँचा सकता है।

29. वातावरण-चित्रण का महत्व बताइए।

उत्तर: वातावरण-चित्रण से तात्पर्य रचना में स्थान, समय, प्रकृति और सामाजिक परिवेश का चित्रण है। वातावरण कहानी या उपन्यास की घटनाओं को वास्तविकता प्रदान करता है। ग्रामीण कथा में खेत, गाँव, मौसम और लोकजीवन का वर्णन वातावरण बनाता है, जबकि शहरी कथा में बाजार, कार्यालय और महानगरीय जीवन महत्वपूर्ण हो सकता है। वातावरण पात्रों की मानसिक स्थिति को भी प्रभावित करता है। प्रभावशाली वातावरण-चित्रण पाठक के सामने घटनाओं का दृश्य उपस्थित कर देता है। इससे रचना में यथार्थ, चित्रात्मकता और भावात्मक गहराई उत्पन्न होती है।

30. हिंदी गद्य में लोकभाषा का महत्व बताइए।

उत्तर: लोकभाषा सामान्य जनता के जीवन और व्यवहार से जुड़ी भाषा है। हिंदी गद्य में इसके प्रयोग से रचनाएँ अधिक स्वाभाविक और जीवंत बनती हैं। पात्रों के संवाद में लोकभाषा उनके क्षेत्र, वर्ग और सामाजिक परिवेश को स्पष्ट करती है। प्रेमचंद और फणीश्वरनाथ रेणु जैसे लेखकों ने लोकभाषा और बोलियों का प्रभावी उपयोग किया। लोकभाषा केवल भाषा को रोचक नहीं बनाती बल्कि लोक-संस्कृति, परंपरा और जीवन-दृष्टि को भी अभिव्यक्त करती है। इसके प्रयोग से साहित्य में जनजीवन की वास्तविकता और विविधता अधिक प्रभावशाली रूप में सामने आती है।

31. नारी-चेतना से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: नारी-चेतना का अर्थ स्त्री के अधिकार, सम्मान, स्वतंत्रता और समानता के प्रति जागरूकता से है। आधुनिक हिंदी गद्य में स्त्री को केवल त्याग और सहनशीलता की प्रतिमूर्ति न मानकर स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया। शिक्षा, विवाह, परिवार, आर्थिक निर्भरता और सामाजिक असमानता जैसे प्रश्न साहित्य में उठाए गए। महिला पात्र अपने निर्णय और संघर्ष के

माध्यम से बदलती सामाजिक चेतना को व्यक्त करते हैं। हिंदी गद्य ने स्त्री की वास्तविक समस्याओं को सामने लाकर समाज को समानता और सम्मान के विषय में सोचने के लिए प्रेरित किया। नारी-चेतना आधुनिक हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है।

32. मानवतावाद क्या है?

उत्तर: मानवतावाद वह दृष्टि है जिसमें मनुष्य की गरिमा, स्वतंत्रता, समानता और कल्याण को सर्वोच्च महत्व दिया जाता है। हिंदी गद्य में मानवतावादी दृष्टि जाति, धर्म, वर्ग और लिंग के भेद से ऊपर उठकर मनुष्य को केंद्र में रखती है। साहित्यकार शोषित और पीड़ित व्यक्ति के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हैं तथा अन्याय का विरोध करते हैं। प्रेमचंद के साहित्य में गरीब और वंचित वर्ग के प्रति गहरी मानवीय संवेदना दिखाई देती है। मानवतावाद साहित्य को व्यापक सामाजिक सरोकार प्रदान करता है तथा पाठक में करुणा, सह-अस्तित्व और समानता की भावना विकसित करता है।

33. हिंदी गद्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप बताइए।

उत्तर: आधुनिक हिंदी गद्य के विकास के समय भारत में राष्ट्रीय जागरण की भावना मजबूत हुई। साहित्यकारों ने पराधीनता, सामाजिक पिछड़ेपन और आर्थिक शोषण के विरुद्ध जनचेतना उत्पन्न की। नाटक, निबंध, कहानी और पत्रकारिता के माध्यम से देशप्रेम, स्वदेशी, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की भावना व्यक्त की गई। भारतेन्दु युग में राष्ट्रीय चेतना विशेष रूप से दिखाई देती है। साहित्यकारों ने भारतीय इतिहास, संस्कृति और भाषा के गौरव को सामने रखा। हिंदी गद्य ने स्वतंत्रता आंदोलन के सांस्कृतिक और वैचारिक वातावरण को मजबूत किया तथा जनता में देश के प्रति प्रेम और जागरूकता उत्पन्न की।

34. हिंदी पत्रकारिता का गद्य के विकास में क्या योगदान है?

उत्तर: हिंदी पत्रकारिता ने आधुनिक हिंदी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक विचार जनसामान्य तक पहुँचे। पत्रकारिता ने भाषा को सरल, स्पष्ट और व्यवहारिक बनाने में सहायता की। भारतेन्दु युग में हिंदी पत्रकारिता का विशेष विकास हुआ। बाद में 'सरस्वती' जैसी पत्रिकाओं ने साहित्य और भाषा को नई दिशा दी। पत्रकारिता ने लेख, निबंध, संपादकीय और समाचार लेखन जैसी गद्य-शैलियों को विकसित किया। इसके माध्यम से हिंदी को व्यापक पाठक वर्ग मिला और राष्ट्रीय तथा सामाजिक चेतना के प्रसार में सहायता हुई।

35. हिंदी गद्य की भाषा-शैली की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: हिंदी गद्य की भाषा-शैली विषय, लेखक और विधा के अनुसार बदलती रहती है। कहानी में भाषा सामान्यतः सरल और संवादात्मक होती है, जबकि निबंध में विचारात्मक तथा साहित्यिक भाषा का प्रयोग होता है। नाटक में संवाद स्वाभाविक और मंचीय होते हैं। आधुनिक हिंदी गद्य ने अत्यधिक कठिन भाषा के स्थान पर सरल, सहज और व्यवहारिक भाषा को महत्व दिया। भाषा में स्पष्टता, संप्रेषणीयता, भावानुकूलता और उचित शब्द-चयन महत्वपूर्ण हैं। श्रेष्ठ गद्य वही है जो अपने विचार और भाव पाठक तक आसानी से पहुँचा सके। विभिन्न बोलियों और लोकभाषाओं के प्रयोग ने भी हिंदी गद्य को समृद्ध किया है।

36. निबंध और लेख में अंतर बताइए।

उत्तर: निबंध और लेख दोनों विचारात्मक गद्य-विधाएँ हैं, लेकिन उनकी प्रकृति में अंतर है। निबंध में लेखक की व्यक्तिगत अनुभूति, शैली और दृष्टिकोण को अधिक स्वतंत्रता मिलती है। लेख सामान्यतः किसी विषय की जानकारी, विश्लेषण और तर्क को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करता है। निबंध साहित्यिक, भावात्मक

और व्यक्तिगत भी हो सकता है, जबकि लेख अधिक तथ्यात्मक और उद्देश्यपूर्ण होता है। हालांकि आधुनिक हिंदी में दोनों विधाओं की सीमाएँ कई बार एक-दूसरे के निकट दिखाई देती हैं। विषय की प्रस्तुति, भाषा और लेखक की व्यक्तिगतता के आधार पर दोनों की पहचान की जा सकती है।

37. नाटक और एकांकी में अंतर बताइए।

उत्तर: नाटक और एकांकी दोनों अभिनय-प्रधान गद्य-विधाएँ हैं। नाटक का कथानक विस्तृत हो सकता है तथा उसमें अनेक पात्र और दृश्य हो सकते हैं। इसके विपरीत एकांकी एक ही अंक में समाप्त होने वाली संक्षिप्त नाट्य रचना है। इसमें सामान्यतः सीमित पात्र और एक केंद्रीय घटना या समस्या होती है। एकांकी में समय और स्थान की सीमा भी कम रहती है। दोनों में संवाद, अभिनय और मंचीयता आवश्यक हैं। एकांकी का उद्देश्य कम समय में किसी प्रभावशाली घटना या समस्या को प्रस्तुत करना होता है। इसलिए इसकी भाषा और कथानक अधिक सघन होते हैं।

38. हास्य और व्यंग्य में क्या अंतर है?

उत्तर: हास्य और व्यंग्य दोनों साहित्य को रोचक बनाते हैं, लेकिन दोनों का उद्देश्य अलग होता है। हास्य का मुख्य उद्देश्य हँसी और मनोरंजन उत्पन्न करना है। व्यंग्य में हास्य के साथ किसी व्यक्ति, संस्था या सामाजिक व्यवस्था की विसंगति और कमजोरी पर आलोचनात्मक प्रहार किया जाता है। हास्य हल्का और मनोरंजक हो सकता है, जबकि व्यंग्य के पीछे गंभीर सामाजिक उद्देश्य रहता है। हरिशंकर परसाई के व्यंग्य में हँसी के साथ सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं पर गंभीर टिप्पणी मिलती है। इस प्रकार हास्य मनोरंजन प्रधान और व्यंग्य आलोचना एवं चेतना प्रधान होता है।

39. मनोवैज्ञानिकता से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: मनोवैज्ञानिकता का अर्थ पात्रों के मन, भावनाओं, इच्छाओं, विचारों और आंतरिक संघर्षों का सूक्ष्म चित्रण है। आधुनिक हिंदी कहानी और उपन्यास में बाहरी घटनाओं के साथ पात्रों की मानसिक दुनिया को भी महत्व दिया गया। लेखक पात्र के व्यवहार और निर्णयों के पीछे छिपे मनोवैज्ञानिक कारणों को समझने का प्रयास करता है। अकेलापन, असुरक्षा, प्रेम, ईर्ष्या, अपराध-बोध और मानसिक तनाव इसके प्रमुख विषय हो सकते हैं। मनोवैज्ञानिक चित्रण से पात्र अधिक वास्तविक और जटिल बनते हैं। यह प्रवृत्ति आधुनिक मनुष्य के आंतरिक जीवन और उसकी समस्याओं को साहित्य में प्रभावी ढंग से व्यक्त करती है।

40. आंचलिकता की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: आंचलिकता का अर्थ किसी विशेष क्षेत्र के जीवन और संस्कृति का साहित्य में विशिष्ट रूप से चित्रण करना है। इसमें स्थानीय बोली, लोकगीत, लोकाचार, परंपरा, वेशभूषा, रीति-रिवाज और सामाजिक संबंधों को स्थान मिलता है। आंचलिक साहित्य उस क्षेत्र के सामान्य लोगों के जीवन को केंद्र में रखता है। इसमें प्रकृति और स्थानीय वातावरण का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य में आंचलिकता का सुंदर रूप दिखाई देता है। आंचलिकता ने हिंदी साहित्य को भारत के विभिन्न क्षेत्रों की विविध संस्कृति और जीवन से परिचित कराया।

41. सामाजिक यथार्थ क्या है?

उत्तर: सामाजिक यथार्थ का अर्थ समाज की वास्तविक परिस्थितियों, समस्याओं, संबंधों और संघर्षों का साहित्य में सच्चे रूप में चित्रण करना है। इसमें गरीबी, बेरोजगारी, शोषण, जातिगत भेदभाव, नारी-असमानता, आर्थिक विषमता और सामाजिक रूढ़ियों जैसी समस्याओं को प्रस्तुत किया जाता है। प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक यथार्थ विशेष रूप से दिखाई देता है।

सामाजिक यथार्थवादी साहित्य पाठक को समाज की वास्तविक स्थिति से परिचित कराता है और उसके भीतर प्रश्न तथा परिवर्तन की इच्छा पैदा करता है। यह साहित्य को जीवन के अधिक निकट लाता है।

42. शीर्षक का साहित्यिक महत्व बताइए।

उत्तर: शीर्षक किसी रचना की पहचान के साथ-साथ उसके केंद्रीय भाव का संकेत देता है। अच्छा शीर्षक संक्षिप्त, सार्थक, आकर्षक और विषयानुकूल होता है। कहानी या निबंध का शीर्षक पाठक में जिज्ञासा पैदा करता है। कई बार रचना पढ़ने के बाद शीर्षक का वास्तविक अर्थ अधिक स्पष्ट होता है। शीर्षक किसी पात्र, घटना, प्रतीक या मुख्य विचार पर आधारित हो सकता है। एक प्रभावशाली शीर्षक पूरी रचना के अर्थ को संक्षेप में व्यक्त कर सकता है। इसलिए साहित्यिक रचना में शीर्षक का विषयगत, कलात्मक और प्रभावात्मक महत्व अत्यंत अधिक है।

43. प्रतीक का साहित्य में क्या महत्व है?

उत्तर: प्रतीक किसी वस्तु, घटना, पात्र या दृश्य के माध्यम से किसी व्यापक विचार या भाव को व्यक्त करने का माध्यम है। प्रतीक के प्रयोग से साहित्य में अर्थ की गहराई और संकेतात्मकता आती है। लेखक कई बार सीधे बात कहने के बजाय किसी वस्तु या घटना के माध्यम से सामाजिक या मानसिक अर्थ व्यक्त करता है। आधुनिक साहित्य में प्रतीक का प्रयोग विशेष रूप से बढ़ा है। सफल प्रतीक रचना के संदर्भ से स्वाभाविक रूप से जुड़ा होता है। प्रतीक पाठक को रचना के भीतर छिपे अर्थों पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है और साहित्य को अधिक कलात्मक बनाता है।

44. ग्रामीण जीवन का हिंदी गद्य में चित्रण बताइए।

उत्तर: हिंदी गद्य में ग्रामीण जीवन का प्रभावशाली चित्रण प्रेमचंद सहित अनेक साहित्यकारों ने किया है। गाँव के किसान, मजदूर,

जमींदार, स्त्रियाँ, जातिगत संबंध, गरीबी, ऋण और लोक-संस्कृति को साहित्य में स्थान मिला। ग्रामीण जीवन को केवल प्राकृतिक सौंदर्य के रूप में नहीं बल्कि संघर्ष, आर्थिक विषमता और सामाजिक समस्याओं के साथ प्रस्तुत किया गया। लोकभाषा, लोकगीत और स्थानीय परंपराओं के प्रयोग से ग्रामीण परिवेश जीवंत बनता है। हिंदी गद्य ने ग्रामीण भारत के सामान्य लोगों के सुख-दुख और संघर्षों को व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचाया। इससे साहित्य में जनजीवन की वास्तविकता मजबूत हुई।

45. नारी-जीवन की समस्याओं का हिंदी गद्य में चित्रण कैसे हुआ है?

उत्तर: हिंदी गद्य में नारी-जीवन की समस्याओं को सामाजिक और मानवीय दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। विवाह, दहेज, शिक्षा का अभाव, आर्थिक निर्भरता, पारिवारिक दबाव और सामाजिक असमानता जैसे विषय अनेक रचनाओं में दिखाई देते हैं। आधुनिक साहित्य में स्त्री को केवल त्याग करने वाली पात्र के रूप में नहीं बल्कि स्वतंत्र इच्छा और निर्णय लेने वाली व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया। नारी पात्र संघर्ष करते हुए अपने अधिकार और सम्मान की माँग करती हैं। हिंदी गद्य ने स्त्री की वास्तविक समस्याओं को समाज के सामने रखकर नारी-सम्मान, समानता और स्वतंत्रता की चेतना को मजबूत किया।

46. दलित चेतना का हिंदी गद्य में क्या महत्व है?

उत्तर: दलित चेतना साहित्य में जातिगत भेदभाव, सामाजिक अन्याय और समानता के प्रश्नों को केंद्र में लाती है। हिंदी गद्य में दलित लेखन ने वंचित समुदायों के अनुभवों और संघर्षों को अभिव्यक्ति दी। इसमें सामाजिक अपमान, शोषण, अधिकारों से वंचित होना और आत्मसम्मान की आकांक्षा प्रमुख विषय हैं। दलित साहित्य केवल पीड़ा का वर्णन नहीं करता बल्कि सामाजिक समानता और न्याय की माँग भी करता है। आत्मकथा, कहानी,

उपन्यास और संस्मरण जैसी विधाओं में दलित जीवन की वास्तविकता सामने आई। इससे हिंदी साहित्य की विषय-वस्तु और दृष्टि दोनों अधिक व्यापक हुईं।

47. आधुनिक हिंदी गद्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर: आधुनिक हिंदी गद्य में अनेक महत्वपूर्ण प्रवृत्तियाँ विकसित हुई हैं। इनमें यथार्थवाद, प्रगतिवाद, मानवतावाद, मनोवैज्ञानिकता, राष्ट्रीय चेतना, नारी-चेतना, आंचलिकता, दलित चेतना और सामाजिक चेतना प्रमुख हैं। साहित्यकारों ने बदलते सामाजिक जीवन, राजनीतिक परिस्थितियों और व्यक्ति के आंतरिक संघर्षों को अभिव्यक्ति दी। कहानी और उपन्यास में सामान्य मनुष्य का जीवन प्रमुख हुआ। निबंधों में सामाजिक और सांस्कृतिक चिंतन विकसित हुआ। व्यंग्य ने सामाजिक विसंगतियों पर प्रहार किया। आधुनिक गद्य की सबसे बड़ी विशेषता उसका जीवन की वास्तविक समस्याओं से जुड़ाव है।

48. हिंदी गद्य के अध्ययन का महत्व क्या है?

उत्तर: हिंदी गद्य का अध्ययन भाषा, साहित्य और समाज को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। कहानी और उपन्यास से मानवीय जीवन तथा सामाजिक परिस्थितियों का ज्ञान मिलता है। निबंध विचार-शक्ति विकसित करता है, नाटक संवाद और अभिनय की समझ देता है तथा व्यंग्य सामाजिक विसंगतियों पर विचार करने की प्रेरणा देता है। गद्य के अध्ययन से शब्द-ज्ञान, भाषा-अभिव्यक्ति और लेखन-कौशल भी विकसित होता है। विद्यार्थियों के लिए यह परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी होने के साथ-साथ आलोचनात्मक सोच और सामाजिक समझ को भी विकसित करता है। हिंदी गद्य हमें अपने समाज और संस्कृति से जोड़ता है।

49. हिंदी गद्य में शिक्षा और सामाजिक सुधार की भूमिका बताइए।

उत्तर: हिंदी गद्यकारों ने शिक्षा और सामाजिक सुधार को साहित्य का महत्वपूर्ण विषय बनाया। अशिक्षा, अंधविश्वास, रूढ़िवाद, जातिगत भेदभाव और नारी-असमानता जैसी समस्याओं के विरुद्ध साहित्य में आवाज उठाई गई। शिक्षा को व्यक्ति के विकास और समाज के जागरण का साधन माना गया। नारी-शिक्षा, जनशिक्षा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने वाली रचनाएँ लिखी गईं। साहित्यकारों ने यह स्पष्ट किया कि शिक्षित और जागरूक समाज ही सामाजिक कुरीतियों का विरोध कर सकता है। इस प्रकार हिंदी गद्य मनोरंजन के साथ सामाजिक सुधार और जनजागरण का प्रभावशाली माध्यम भी बना।

50. परीक्षा की दृष्टि से हिंदी गद्य की तैयारी कैसे करें?

उत्तर: हिंदी गद्य की परीक्षा की तैयारी के लिए सबसे पहले पूरे पाठ्यक्रम को विधाओं और रचनाकारों के अनुसार विभाजित करना चाहिए। प्रत्येक पाठ के कथ्य, प्रमुख पात्र, उद्देश्य, भाषा-शैली और साहित्यिक महत्व को समझना आवश्यक है। प्रमुख रचनाकारों तथा उनकी प्रसिद्ध रचनाओं के नाम सही रूप में याद करने चाहिए। उत्तर लिखते समय पहले संक्षिप्त भूमिका, फिर मुख्य विवेचन और अंत में निष्कर्ष देना चाहिए। केवल रटने के बजाय विषय को समझकर अपने शब्दों में लिखने का अभ्यास करना चाहिए। नियमित रूप से 150 शब्दों के उत्तर लिखने से समय-प्रबंधन, प्रस्तुति और परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने की संभावना बढ़ती है।